नव वर्ष के प्रति
दादी जानकी जी का शुभ संदेश

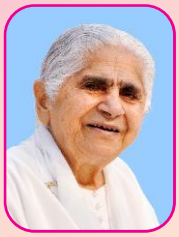

सुख-शान्ति-पवित्रता से सम्पन्न नवविश्व के रचयिता, सर्वरक्षक परमपिता परमात्मा शिव के अति स्नेही भाइयो और बहनो,

नववर्ष के साथ-साथ नवयुग और नए कल्प की भी हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार करें।

नववर्ष के आगमन से बुद्धि रूपी नेत्र के सामने नवयुग के नज़ारे प्रत्यक्ष हो रहे हैं। सर्व आत्माओं की यह आश कि विश्व में एकता हो, सुख, शान्ति, समृद्धि हो बहुत जल्दी पूरी होने वाली है। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा.... वाली दैवी दुनिया हमारा आह्वान कर रही है।

वर्तमान समय सृष्टि-चक्र का अति महत्वपूर्ण समय है। हम जाते हुए कलियुग और आते हुए सतयुग की संधि पर अर्थात् संगमयुग पर खड़े हैं। हमें सदा ध्यान रहे कि इस हीरे तुल्य समय का एक-एक पल सफल हो। हमारा हर सेकण्ड, हर संकल्प, बोल, कर्म साधारण न हो, श्रेष्ठ हो। हम एक-दूसरे को पूरा सम्मान दें, रहमदिल बनें, सबको प्यार की पालना दें और सबके साथ सच्चे होकर चलें। एक-दूसरे के गुणों को देखें। साधनों में बुद्धि को न लगाकर ऊँचे दर्जे की साधना द्वारा आध्यात्मिक जीवन को प्रत्यक्ष करें। मन की स्थिति एकरस और 'मनमनाभव' रखें। एकाग्रता की शक्ति द्वारा शान्ति की गहन अनुभूति कर विश्व में शान्ति की लहर फैलाएँ।

वरदाता भगवान शिव से हमें अनेकानेक वरदान मिले हैं। हम अपनी वृत्ति द्वारा वृत्तियों को परिवर्तन करने की सेवा करें। शक्तिशाली मनसा सेवा द्वारा निर्विघ्न वायुमण्डल बनाएँ। अपने सर्व बोझ पिता परमात्मा को देकर सदा मुसकराते रहें।

नए वर्ष में दृढ़ता के साथ सर्व कमी-कमजोरियों को विदाई देकर 'विजयी भव' के वरदान को आत्मसात करने की कोटि-कोटि बधाइयाँ आप सब स्वीकार करें।

सर्व भाई-बहनों को नए वर्ष और नए युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन
बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- ब्रह्मा बाबा की संक्षिप्त जीवनी..4
- ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान-कलश नारी के सिर पर क्यों रखा? *(सम्पादकीय)* 7
- श्रद्धांजलि.....8
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- साकार नेत्रों से निहारे गए ईश्वरीय चरित्र 10
- ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न.....14
- बाबा ने वतन में पढ़ाए ज्ञान के पाठ.....17
- मास्टर दाता बनो.....20
- नवजीवन दाता मेरा बाबा 21
- नव वर्ष इस बार *(कविता)* ...23
- घुटनों व कूल्हों की सर्जरी....23
- प्रथम मिलन में समर्पण 24
- बाबा ने कहा, बच्चा बहुत अच्छा है 27
- सत्य बाबा के सत्य बोल.....30
- बाबा ने कहा, बच्ची का चेहरा बहुत सेवा करेगा.....31
- अन्तिम जन्म में बिना भक्ति किए मिल गए भगवान 33

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com